75 वा पायदान

जिंदगी के भागदौड़ से ,
दौड़ते दौड़ते ,रफ़्तार से,
छु लिया 75 वा साल.....
नहीं रहा ,जोश उत्साह,
अब कदम सुस्त हो गये
अभी आई नहीं लाठी हात में
पर..... हो गई धीमी चाल
छु लिया 75 वा साल.....
अभी आया;
पतझड का मौसम,
जिंदगी से
चले गई बहार
पत्ते पिले- पड़ गये
अब सुख गई है डाल,
छु लिया 75 वा साल.....
मेहनत –परिश्रम से
करके कमाई,
बचा लेते थे कभी
पैसा और धन,
अब है अमदनी अट्ठनी
खर्चा रुपय्या.
अब है ,बुरा अपना हाल
छु लिया 75 वा साल.....
डायबेटीज –बी.पी. जैसो ने
जकड़ रखा है
फिर भी अभी
जिंदा है हम.
यही तो है
माँ की दुवा,दूध का कमाल,
छु लिया 75 वा साल.

प्रा.डॉ.नितीन कुंभार